महादेवी वर्मा की कविताये :स्त्री अस्मिता की धमक

डॉ. रूपा सिंह,

एसोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी),
बाबू षोभाराम राजकीय स्नातकोत्तर कला महाविद्यालय,
अलवर (राजस्थान)

शोध सारांश

महादेवी की कविता की व्याख्या के क्रम में आलोचकों ने प्राय : अतिवादी मानदंडों का प्रयोग किया है। डॉ नगेन्द्र ने लिखा है कि महादेवी की कविता को एकाकिनी बरसात का नाम देना उचित है। नंददुलारे वाजपेयी महादेवी की आरंभिक कविता को छायावाद की कविता मानने से इंकार करते है। 'हिन्दी में महादेवी जी का प्रवेष छायावाद के पूर्ण ऐश्वर्यकाल में हुआ था लेकिन आरंभ से ही उनकी रचनायें छायावाद की मुख्य विशेषताएं से रिक्त थी। मानव अधवा प्रकृति के सूक्ष्म लेकिन व्यक्त सौंदर्य में आध्यात्मिक छाया का मन मेरे विचार से छायावाद की एक सर्वमान्य व्याख्या होनी चाहिये। इस व्याख्या में आये सूक्ष्म और व्यक्त इन अर्धगंभीर शब्दों को हम अच्छी तरह समझ लें। यदि वह सौंदर्य सूक्ष्म नहीं है तो हम उसे छायावाद के अन्तर्गत नहीं लें सकेंगे।' अमृत राय जो एक प्रगतिशील आलोचक माने जाते है। महादेवी वर्मा की कविता के बारे में कहा महादेवी की कविता की पंक्ति पंक्ति आसुंओं से गीली है। यहां तक कि उनका एक आंसुओं का देष ही सबसे अलग है। उनकी सारी कविताओं को एक में पिरोने वाली आसुंओं की लडी जो सकती है। उन्हें आंसुओं से मोह है और उनसे वे अपना सिंगार करती है, क्योंकि उन्हे अपनी व्यथा से मोह है।

विरह का जलजात जीवन, विरह का जलजात

xxx

रजतरषिमयों की छाया में धूमिल घन सा बह आता

xxx

मधुर मधुर मेरे दीपक जला

xxx

क्या पूजन क्या अर्चन रे।

महादेवी वर्मा की इन प्रसिद्ध काव्यपंक्तियों के आधार पर उन्हें छायावाद के चार प्रमुख स्तंम्भों में से एक तो माना गया लेकिन चूंकि दुर्भाग्यवष उनका ऐसा कोई विशेष विषय–छवि–ग्रंथ इसमें शामिल न था और वे एक स्त्री थीं, जिसका दूर–दूर तक कोई लिखित इतिहास भी न था तो उस समय के महान् आलोचक उन्हें यह कह कर खारिज करते रहे कि उनकी कवितायें निरीह, बेचारी, धोखा खायी, पूर्णत : समर्पित स्त्री का रोना पीटना मात्र है। प्रगतिषील आलोचक अमृतराय ने लिखा–

''महादेवी की कविता की पंक्ति–आंसुओं से गीली है उन्हें आंसुओं से मोह है, और उनसे वे अपना श्रृंगार करती है, क्योंकि उन्हें अपनी व्यथा से मोह है। ''

नंद दुलारे वाजपेयी ने लिखा है –''हिन्दी में महादेवी जी का प्रवेष छायावाद के पूर्ण ऐश्वर्यकाल में हुआ था, लेकिन आरंभ से ही

उनकी रचनायें छायावाद की मुख्य विषेषताओं से प्राय : रिक्त थी। ''

अब यदि इन छायावाद को समझकर उसमें महादेवी की कविता का मूल्यांकन करें तो पायेंगे कि ये कवितायें उस व्याख्या के अनुसार न केवल आध्यात्मिकता वरन् निजला का भी ऐसा ठोस संसार सामने रखती है जिसमें वस्तुगत मूल्यांकन जिसमें नवजागरण का स्वर रह–रह टकरा रहा था, उसकी बहुत मुखर अभिव्यक्ति इन कविताओं में है। जिस नवजागरण से स्त्रियों, दलितों और किसानों के संघर्ष और आक्रोंश को अभिव्यक्ति मिलनी थी, ये मुख्य स्वर कहीं दबा देने के प्रयास में आलोचकों ने खूब मुखर इस स्त्री स्वरको भी कुचल देने का प्रयास किया। उनके आंसुओं पर तो खूब ध्यान दिया गया लेकिन आक्रोंष पर नहीं। उनकी कविता अध्यात्म–साधना की अभिव्यक्ति मात्र बना दी गयी और उन्हें सामंती युग की मीरा (विद्रोहिणी नारी नहीं) बना दिया गया जो निरीह भाव से भगवान का भजन गाती रहें। निराला सहित अन्य कवियों के काव्य को साम्राज्यवाद –विरोध और सांमतवाद–विरोध से जोड़ा गया लेकिन महादेवी की कविता का पाठ इस आलोक में नहीं किया गया। बिल्कुल हो सकता है कि उनकी कविताएं निजी रही हो, किसी से प्रेम हुआ हो, कही धोखा हुआ हो, आंसुओं की पंक्ति हो (कैसे कह दूं अलि सपना है, अरे वह मूक मिलन की बात) लेकिन प्रेम तो है। लौकिकता तो है। वहां मीरा की तरह एक भी वाक्य नहीं कि–मोहे चाकर राखों जी या मैं अबला बल नाहिं गुसाई, राखों अबके लाज कोई बेचारगी नहीं। गिडगिडाहट नहीं। एक एंटिटी के रूप में वह चाकर होने से मना करती है। अपनी परिणति अपने हाथ रखती है। अस्तित्व पर संकट है लेकिन अस्मिता पर संकट नहीं आने देती।

''अस्मिता'' आधुनिक युग बोध के साथ वाली वह चेतना है जो स्त्री को वस्तुगत रूप से अपना मूल्यांकन करना सिखाती है, अपने को महत्व देना और अन्य किसी परिवार, संबंध या संस्था में अपने को विसर्जित कर देने के विरूद्ध निरंतर अपने बौद्धिक विकास के साथ, अब तक हुई राजनीति की भी समझ लेने का आह्वान करती है। महादेवी सब समझती है वे जानती है कि आधुनिक समय अभी समय ऐसा नहीं है जिसमें स्त्री को प्रेम करने की स्वीकृति प्राप्त है। युग को स्त्री के प्रति सभ्य और सहिष्णु होने में अभी वक्त लगेगा। प्रेम को तो वह अपने अंदर छुपा सकती है जल मर सकती है। लेकिन अपनी अस्मिता का लोप करके जी नहीं सकती है। वह प्रेम की उस मध्यमार्गी सांमतीय प्रेम की व्याख्या से विद्रोह करती है जिसमें पुरूष स्वामी और स्त्री दासी है इसलिए वे कहती है मिलन का नाम मत लो मैं विरह में चीर हूं। अपनी दीनता–हीनता में वह पर्याप्त कलेकुलेटिव है। पितृ सत्ता प्रदान समाज में प्रेमी और प्रिया के बीच विषम सामाजिक शक्ति संबंध है। लेकिन आंतरिकता में तो दोनो बराबर है। आतंरिकता में यह बराबरी है या नही महादेवी इसका पूरा नाप–तौल जोख लेना चाहती है क्या सच जो पीड़ा मुझे उसने दि है। स्वंय भी उस पीड़ा से बिन्धा है। विह्वल है?

पर शेष नहीं होगी ये प्राणों की क्रीडा

तुझको पीडा में ढूंढा तुझमें ढूंढों गी पीडा

मीरा जब मुरारी को बिकती है तो अस्मिता बोध के साथ भक्ति का आवरण भी है। वह इतनी तल्लीन है कि खरीदे जाने से पहले ही बिक–बिक जाती है।

'मायी नी मैं तो लिया गोविन्दों मोल '

लेकिन महादेवी बराबर की बांट रखती है उनकी कविताओं में मौल–तौल, व्यापार, हाट के खूब बिम्ब है। जो पूंजीवाद के प्रभाव स्वरूप है तो स्त्री की कैल्कुलेषन बुद्धि का सामर्थय भी दिखाते है। वे स्पष्ट कहती है

चल रही नित लिये आंसुओं की हाट और चिंगारियों का मेला

एक और बिम्ब महादेवी की कविताओं में खूब आया है। वह है रात का अंधकार और अंधकार से लडता हुआ एक नन्हा दीपक उन्होंने दीपषिखा की भूमिका में जो लिखा है उस पर पर्याप्त ध्यान देने की आवष्यकता है। वे लिखती है आलोक मुझे प्रिय है। पर दिन से अधिक रात में दिन में तो अंधकार से उसके संघर्ष का पता हीं नहीं चलता परन्तु रात मे झिलमिलाती लोक योद्धा की भूमिका में अब त्वरित होती है निराला राम की शक्ति पूजा और बादलराघ जैसी कविताओं को स्वाधीनता चेतना की पुकार से जोडा गया। लेकिन महादेवी की इस पंक्ति को अनसुनी ही रहने दिया गया।

रात के उर में दिवस की चाह का भार हू

महादेवी मे स्वाधीनता की आंकाक्षा और उसके लिए संघर्ष की दृढता है। उन्हे अधंकार से अधिक प्रिय प्रकाष है और पलायन से अधिक संघर्ष स्त्री जीवन की पराधीनता का अंधकार कैसे दूर हो, इसका बिन्दु वे अपनी कविताओं में बाईनरी अपोजिषन के आधार पर रखती चलती है। बाईनरी अपोजिषन की रणनीति का प्रयोग कविता में नये ं अर्थ को रेखांकित करने के लिऐ किया जाता है। देरीदा ने अपने 'डीकंस्ट्रबषन' में इसे सिद्ध किया जाता है कि जिस मंषा से रचना लिखि गयी है, पाठ के निर्मित होने पर वही मंषा पाठ से अलग हो जाती है और व्याख्या और पुर्नव्याख्या की संभावना को बढ़ा देती है। इस रूप में महादेवी वर्मा के बिंब अचूक प्रयोग है–यह व्यथा की रात का कैसा सबेरा है, क्यों मुझे प्रिय हों न बंधन, आंसू का मोल न लूंगी मै, वे घन–चुबित मैं पथ–भूली। महादेवी अपने समय से बहुत आगे की कवयित्री है। उन्हें पढ़ने के लिए उनकी भाषा–संहिता अथवा कोड को खोजना जरूरी है, क्योंकि वे केवल कवयित्री और लेखिका नहीं है वे एक कुषल संपादक होने के साथ–साथ उस समय की ऐक्टिविसट स्त्री भी थी, जो स्त्रियों की रचनाषीलता और आत्मचेतना बढ़ाने के लिए स्त्री कवि–सम्मेलन और महिला गल्प–सम्मेलनों का आयोजन भी करती थी। महादेवी साहित्यिक और राजनीतिक चेतना ही मीरा–जयन्ती मनाने की शुरूआत की थी ताकि हिन्दी क्षेत्र की स्त्रिंया मीरा के विद्रोही व्यक्तित्व से प्रेरणा लेकर अपनी स्वतंत्रता के लिये संघर्ष और सृजनरत हो सकें। एक रणनीति के तहत महादेवी ने जो लिखा वह हमें इमेज के लिहाज से परपंरागत दिखता है, किन्तु भाव और विचार के लिहाज से आधुनिक है।

मैक्स वेबर अनुसार महादेवी ने स्त्री के रेषनल विमर्ष का व्यापक कैनवास रचा है। वहां प्राण है तो देह का स्वीकार भी है। वेदना है तो दुलार भी है। महादेवी अपनी कविता में अपनी देह के प्रति सतर्क है। शरीर के अंगों के बारे में पर्याप्त सचते है। वहां प्रिय की पतीक्षा है तो रत आंखें भी है, पथ को बुहारना ही है तो उत्सुक पलके है, अर्चना ऐसे नहीं की जावेगी, उंगलिया वहां व्याकुल भी है.....।

जूडिथ बटलर, के शब्दों में कहा जा सकता है कि यह ऐसा विमर्ष है जो स्त्री को शक्तिषाली बनाता है। यह ऐसा विमर्ष है जो यथार्थ का नियमन करता है। यह अनावष्यक नहीं कि महादेवी ने स्त्री की सषक्तिकरण के लिए और विष्व–दृष्टिकोण को रूपायित करने के लिए स्त्री–इतिहास की मांग की। वह बार–बार इतिहास में जाती है लेकिन वहां मनुष्य–इतिहास नहीं, पुरूष–इतिहास उसे मिलता है। स्त्री इतिहास लेखन की आवष्यकता पर बल देते हुए चुप नहीं रहती बल्कि उन तमाम उलझन भरी जगहों को उजागर करते हुए उत्तर आधुनिक शैली में अपनी बात कहती है।

मैं नीर भरी दुःख की बदली

विस्तुत नभ का कोई कोना

मेरा न कभी अपना होना

परिचय इतना इतिहास यही

उमडी कल थी, मिट आज चली।

महादेवी का मूल्यांकन आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता के औजारों से ही संभव है। उन्हे छायावादी–परिप्रेक्ष्य से निकालकर स्त्रीवादी – परिप्रेक्ष्य में रखकर देखने से उनकी काव्य रणनीतियों के प्रयोग समझ में आयेंगे और तब महादेवी की कचिता में स्त्री–अस्मिता की धमक सषक्त रूप से हम सुन सकेंगे।

1. संचियता–महादेवी वर्मा –संपादक –डॉ. निर्मला जैन वाणी प्रकाषन प्रथम सं. 2002
2. महादेवी रचना संचयन, चयन एवं संपादन–विष्वनाथ प्रसाद तिवारी, साहित्य अकादमी प्रथम संस्करण 1998
3. इतिहास में स्त्री, सुमन राजे, भारतीय ज्ञानपीठ प्रथम संस्करण–2012, नई दिल्ली।
4. स्त्री विमर्ष का लोकपथ–अनामिका, वाणी प्रकाषन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण, 2012
5. स्त्री विमर्ष की उत्तरगाथा–अनामिका, सामयिक प्रकाषन, दिल्ली, प्रथम संस्करण–2012
6. सत भूमिकायें–महादेवी वर्मा, संपादक–दूधनाथ सिंह, राजकमल प्रकाषन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2013
7. अनभै सांचा–मैनेजर पांडे, वाणी प्रकाषन, दिल्ली, 2010